सर्वोत्तम शर्मा (सहायक प्रवक्ता)
स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, शाहजहांपुर

व्यवसायिक दौर में शिक्षा का बाजारीकरण

सार

शिक्षा का बाजारीकरण व्यवसायिक दौर में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। इसका मतलब है कि शिक्षा व्यवसाय के रूप में देखी जा रही है, जिससे यहाँ तक कि शिक्षा को एक उत्पाद और सेवा के रूप में देखा जा रहा है। शिक्षा के इस बाजारीकरण के पीछे कई कारण हैं, जैसे निजीकरण, ग्लोबलाइजेशन, तकनीकी प्रगति और विपणन की तकनीकों में वृद्धि। यह विकास न केवल विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रभावित कर रहा है, बल्कि शैक्षणिक संस्थानों के व्यवसायिक प्रतिमान को भी परिवर्तित कर रहा है। इसके साथ ही, शिक्षा के इस बाजारीकरण से नई संभावनाएं और चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं।

अतः यह विषय समाज, राजनीति और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है। इस प्रक्रिया के दौरान, यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षा के मूल उद्देश्य – ज्ञान, समझ, और सोचने की क्षमता को बनाए रखने का ध्यान रखा जाए। शिक्षा के बाजारीकरण को समाज के हित में एक सकारात्मक दिशा में ले जाने की आवश्यकता है, ताकि समाज के सभी वर्गों को उच्च गुणवत्ता और समान अवसर प्राप्त हों।

मुख्य शब्द – व्यवसायिकरण, शिक्षा, बाजारीकरण

व्यवसायिक दौर में शिक्षा का बाजारीकरण

आमुख –

व्यवसायिक दौर में शिक्षा का बाजारीकरण एक महत्वपूर्ण विषय है। इसका मतलब है कि शिक्षा को एक उत्पाद या सेवा के रूप में देखना। यह बड़े पैमाने पर शिक्षा को विपणन और बिक्री के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास करता है। बाजारीकरण का एक प्रमुख लक्ष्य अधिक उपभोक्ताओं को शिक्षा तक पहुंचने के लिए सुविधाएं प्रदान करना है।

शिक्षा के बाजारीकरण में तकनीकी उन्नति का भी अहम योगदान है। इंटरनेट और अन्य तकनीकी उपकरणों के उपयोग से, विद्यार्थी अब अन्य क्षेत्रों से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यह भी उन्हें अधिक विकल्पों की सुविधा प्रदान करता है।

हालांकि, शिक्षा के बाजारीकरण के साथ चुनौतियाँ भी हैं। विद्यार्थियों के बीच संतुलित पहुंच की सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है, ताकि गरीब और धनी छात्रों के बीच अन्याय न हो।

इसके साथ ही, शिक्षा के बाजारीकरण से शिक्षा संस्थानों के अनुप्रयोगी दामों का भी समाधान हो सकता है। यह उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद कर सकता है और उन्हें बेहतर उपकरण और सुविधाओं की पहुंच प्रदान कर सकता है।

अंत में, शिक्षा के बाजारीकरण का सही तरीके से प्रयोग करना महत्वपूर्ण है। यह समाज में शिक्षा के प्रति उत्साह और रुचि को बढ़ा सकता है, परंतु इसे नियमित जाँच के अधीन रखना भी महत्वपूर्ण है ताकि इसका दुरुपयोग न हो।

यहाँ कुछ बाजारीकरण के प्रमुख पहलुओं का उल्लेख किया गया है:

1. **प्राथमिक और स्वतंत्र शिक्षा संस्थानों के स्थापना:** व्यवसायिक दृष्टिकोण से, निजी प्राथमिक और स्वतंत्र शिक्षा संस्थानों की स्थापना किया जा सकता है जो शिक्षा के क्षेत्र में निवेश कर सकते हैं और इसके माध्यम से लाभ कमा सकते हैं।
2. **विद्यार्थियों को ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की पेशकश:** विभिन्न विश्वविद्यालय और शैक्षणिक संस्थान ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की पेशकश करके अपने शिक्षा सेवाओं को व्यापक बना सकते हैं और विद्यार्थियों को दुनियाभर से आकर्षित कर सकते हैं।
3. **शैक्षणिक और संशोधन केंद्रों की स्थापना:** निजी या सार्वजनिक शैक्षणिक और संशोधन केंद्रों की स्थापना करके, शिक्षा क्षेत्र में नवीनतम और उत्कृष्ट शोध तथा प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान की जा सकती है।
4. **विद्यार्थियों को अध्ययन करने के लिए ऋण प्रदान करना:** विद्यार्थियों को अध्ययन करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए निजी ऋण कंपनियों या वित्तीय संस्थाओं को ले सकता है।
5. **शिक्षा संस्थानों की संचालन में प्रौद्योगिकी का उपयोग:** शिक्षा संस्थानों को प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उनकी प्रबंधन प्रक्रियाओं को अनुकूलित करने और शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न आधुनिक साधनों का उपयोग करने की संभावना होती है।

यह सभी पहलुओं के साथ, शिक्षा के व्यवसायिकीकरण के फायदे और नुकसान हो सकते हैं, और यह निर्भर करता है कि कैसे इसे प्रबंधित किया जाता है और समाज के लिए कितना उपयोगी है।

शिक्षा के बाजारीकरण से अभिभावकों को हानि –

शिक्षा के बाजारीकरण से अभिभावकों को हानि होने की संभावना है। इस प्रक्रिया के दौरान, शिक्षा को व्यवसायिक उद्देश्यों के लिए उपयोगिता के रूप में देखा जाता है, जिससे शिक्षा के मूल उद्देश्यों का उल्लंघन होता है। विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए सामग्री, पाठ्यक्रम, और परीक्षण के माध्यम से लाभ के स्थान पर, विद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों को विपणन उद्योग के रूप में

देखा जाता है। इससे प्रभावित होने वाले अभिभावकों में समाजिक न्याय, अध्यापक–छात्र संबंध, और शैक्षिक गुणवत्ता के स्तर में गिरावट हो सकती है।

विद्यालयों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ने के कारण, अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों के शैक्षिक सफलता के लिए अत्यधिक दबाव महसूस करते हैं। इससे उनके बच्चे के प्रति नकारात्मक प्रत्याशाएं और तनाव बढ़ सकते हैं। विद्यार्थियों को शैक्षिक अनुभव के स्थान पर व्यावसायिक उत्पादों के रूप में देखने से, उनकी रूचि और जिज्ञासा को कम हो सकता है। अधिकांश अभिभावक भी ऐसे शिक्षा प्रणालियों के प्रति निष्ठावान होते हैं जो उनके बच्चों के विकास को बढ़ावा देती है, लेकिन बाजारीकरण के कारण ऐसी प्रणालियों को अधिक महंगा बनाने की संभावना होती है।

अतः, शिक्षा के बाजारीकरण से अभिभावकों को हानि होने की संभावना होती है, जो शैक्षिक प्रणालियों के गुणवत्ता और पहुँच को प्रभावित कर सकती है। इससे शिक्षा के मूल उद्देश्यों के साथ–साथ अभिभावकों के सामाजिक और मानसिक स्थिति पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

शिक्षा के बाजारीकरण से विद्यार्थियों को हानि –

शिक्षा के बाजारीकरण से विद्यार्थियों को हानि हो रही है, यह एक चिंताजनक और गंभीर समस्या है। शिक्षा को व्यापारिक कार्यक्षेत्र में बदलने का प्रयास, विद्यार्थियों के शिक्षालय जीवन और उनके भविष्य को प्रभावित कर रहा है।

पहला हानिकारक परिणाम यह है कि शिक्षा एक वस्तुवादी माध्यम बन गई है, जिसमें आर्थिक लाभ की प्राथमिकता होती है, और यह विद्यार्थियों के मानवीय और सामाजिक विकास को अनदेखा करता है। शिक्षा को केवल एक व्यवसाय मानकर, विद्यार्थियों को अध्ययन की सामर्थ्यता के स्थान पर एक औद्योगिक उत्पाद के रूप में देखा जाता है।

दूसरा, शिक्षा के बाजारीकरण से विद्यार्थियों की शैक्षिक असमानता में वृद्धि हो रही है। धनवान परिवारों के बच्चे विद्यालयों में उत्तम शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर हासिल करते हैं, जबकि गरीब परिवारों के बच्चों को अच्छी शिक्षा से महजूरी कर दिया जाता है।

तीसरा, शिक्षा के व्यापारीकरण से विद्यार्थियों का मानवाधिकार भी कमजोर हो रहा है। शैक्षिक संस्थान अक्सर विद्यार्थियों को अनाधिकृत तरीके से दबाव डालते हैं, उन्हें आर्थिक बोझ बढ़ाते हैं और उनकी स्वतंत्रता को कम करते हैं।

इन सभी कारणों से, शिक्षा के बाजारीकरण से विद्यार्थियों को हो रही हानि अत्यंत चिंताजनक है। इसे रोकने के लिए समाज को शिक्षा को सामाजिक न्यायपूर्ण और समानता की दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, और नीतियों को इसके लिए निरंतर आवश्यक कार्रवाई करनी चाहिए।

शिक्षा के बाजारीकरण से समाज पर नकारात्मक प्रभाव –

शिक्षा के बाजारीकरण से समाज पर नकारात्मक प्रभाव कई मायनों में देखे जा सकते हैं। पहले तो, यह विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा तक पहुँचने में अधिक भारी आर्थिक दबाव डाल सकता है। शिक्षा की सामान्यीकरण से, यह संसाधनों की अनुपयोगिता और विभाजन को बढ़ा सकता है,

जिससे गरीब और पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिलने में अधिक मुश्किल हो सकती है। दूसरे, यह निजी संस्थानों के महत्व को बढ़ा सकता है, जिससे शिक्षा का वास्तविक स्वार्थित्व बढ़ सकता है। ऐसे में, शिक्षा का गुणवत्ता धीमी हो सकती है और छात्रों की उचित विकास नहीं हो पाता।

इसके साथ ही, शिक्षा के बाजारीकरण से सामाजिक और आर्थिक असमानता भी बढ़ सकती है। व्यापारीकृत शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को शिक्षा के अधिक लाभान्वित होने की संभावना देती है, जिनके पास धन की पर्याप्तता है। इससे, वे उच्च शिक्षा और अध्ययन के अवसरों का लाभ उठा सकते हैं, जबकि गरीब विद्यार्थियों को इससे वंचित किया जा सकता है। इससे समाज में असमानता बढ़ सकती है और गरीब वर्ग के लोग आर्थिक रूप से और भी पिछड़ सकते हैं।

अंततः, शिक्षा के व्यापारीकृतिकरण से विद्यार्थियों की शिक्षा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों की कमी आ सकती है। निजी शिक्षा प्रणाली अक्सर लाभ कमाने के माध्यम के रूप में शिक्षा को देखती है और इससे नैतिक मूल्यों की अवहेलना हो सकती है। ऐसे में, यह समाज के नैतिक आधारों को कमजोर कर सकता है और समाज को नकारात्मक प्रभावों से गुजरना पड़ सकता है।

शिक्षा का बाजारीकरण रोकने के उपाय –

शिक्षा का बाजारीकरण एक महत्वपूर्ण विषय है जो समाज के भविष्य को प्रभावित करता है। शिक्षा का व्यापारिकरण उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न रूपों में देखा जा सकता है, जैसे की निजी कॉलेजों और संस्थानों का उच्च मूल्यांकन, शिक्षा सामग्रियों का विपणन और शिक्षा के लिए अनुबंधों की प्रस्तुति। इससे शिक्षा के साथ–साथ समाज के अधिकांश वर्ग को भी उचित शिक्षा की पहुंच से वंचित किया जा सकता है।

शिक्षा के बाजारीकरण को रोकने के लिए सरकारों को सख्त कदम उठाने चाहिए। वे निजी शिक्षा के संबंध में नियमों को मजबूत कर सकते हैं और निर्देशिकाएं जारी कर सकते हैं जो शिक्षा की गुणवत्ता और पहुंच को सुनिश्चित करें। साथ ही, सरकारें निजी शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता और अनुदान प्रदान करके सामाजिक–आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को शिक्षा के लिए पहुंचने में मदद कर सकती हैं।

विशेषज्ञों और समाज के अन्य सदस्यों को भी इस मुद्दे पर जागरूक होना चाहिए। उन्हें शिक्षा के बाजारीकरण के नकारात्मक प्रभावों को समझने और उनका सामना करने के लिए सहयोग करना चाहिए। इसके लिए सामाजिक आंदोलन, चेतावनी अभियान और शिक्षा के प्रति लोगों की जागरूकता को बढ़ावा देना जरूरी है।

शिक्षा का बाजारीकरण को रोकने के लिए समाज के सभी स्तरों पर साझेदारी, सामाजिक संगठन, और सरकारी नीतियों का सुझाव लिया जा सकता है ताकि हर व्यक्ति को उचित और गुणवत्ता वाली शिक्षा की पहुंच हो सके।

विद्यार्थियों को तनाव मुक्त शिक्षा देने की आवश्यकता –

शिक्षा के बाजारीकरण के बढ़ते प्रभावों ने छात्रों को तनावपूर्ण परिस्थितियों में डाल दिया है। आधुनिकीकरण के चलते, शिक्षा को व्यापारिक उद्देश्यों के लिए उपयोगिता अर्जित करने की दिशा में ले जाने के कारण, छात्रों के मानसिक स्तिथि पर असर पड़ा है। यह प्रक्रिया छात्रों के परिसंपत्ति, अध्ययन, और आत्मविश्वास को प्रभावित करती है, जिससे उन्हें तनाव महसूस होता है। शिक्षा के व्यवसायीकरण से, विद्यार्थियों के परिणामों पर दबाव बढ़ जाता है, जो उनकी शैक्षिक और मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है।

तनाव मुक्त शिक्षा की आवश्यकता ने एक नई दिशा का प्रारंभ किया है। इसमें विद्यार्थियों को सिखाया जाता है कि शिक्षा उनके विकास और समृद्धि के लिए है, न कि लाभ के लिए। साथ ही, उन्हें सामाजिक और मानसिक समर्थन प्रदान किया जाता है, ताकि वे पढ़ाई में निष्पादन कर सकें और अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर हो सकें। इस दृष्टिकोण में, सामाजिक न्याय और समृद्धि के लिए सकारात्मक बदलाव की आवश्यकता है, जो छात्रों को एक सुरक्षित और स्थिर शिक्षा परिवेश में स्थायी करेगा। इस दिशा में कदम बढ़ाना आवश्यक है ताकि हम एक समृद्ध और समान समाज की दिशा में अग्रसर हो सकें।

परिणाम –

शिक्षा के बाजारीकरण के खिलाफ विरोध के समय सरकार ने कई कदम उठाए हैं। यह कदम उदाहरणात्मक रूप से निजी शिक्षा संस्थानों के द्वारा लाभांशक शिक्षा की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने के लिए हैं। सरकार ने शैक्षिक संस्थानों को मानकों के अनुसार लाइसेंसिंग के लिए विनियमित किया है, जिससे शिक्षा के स्तर की गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके। इसके अलावा, सरकार ने शिक्षा योजनाओं में सीमित विनिवेश और वित्तीय सहायता प्रदान करके निजी क्षेत्र को सीमित किया है। यह कदम शिक्षा को सार्वजनिक डोमेन से निकाल कर निजी सेक्टर के दबाव को कम करने का प्रयास है।

इन कदमों का परिणाम सामान्य रूप से विवादास्पद रहता है। अन्यत्र यह देखा जाता है कि निजी शिक्षा संस्थानों के बीच कठिन प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि करने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि, कुछ लोग इसे सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के खिलाफ एक कदम मानते हैं जो समाज में विषमता को बढ़ाता है। इस विषय पर विचार करते समय उन्होंने यह भी दिखाया कि शिक्षा के निजीकरण से गरीब और अति गरीब वर्गों का आधिकारिक शिक्षा से वंचित होने का खतरा हो सकता है।

शिक्षा के बाजारीकरण के खिलाफ सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामों का महत्वपूर्ण परिचय देते हुए, यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा को व्यापार का विषय बनाने के नतीजे विवादास्पद हैं। सरकार द्वारा ऐसे कदमों का अधिकारिक लागू करना शिक्षा के समान उपलब्धता और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। बाजारीकरण से शिक्षा के क्षेत्र में आर्थिक असमानता बढ़ सकती है और शिक्षा के लक्ष्य को अनादरित किया जा सकता है। साथ ही, यह छात्रों के लिए आर्थिक आय से असहायक स्थिति बना सकता है और शिक्षा की गुणवत्ता में कमी आ सकती है। सरकार के द्वारा शिक्षा के बाजारीकरण के विरुद्ध कदम जैसे कि निजी स्कूलों पर नियंत्रण बढ़ाना, शैक्षिक संस्थानों

की गुणवत्ता के मानकों को बढ़ाना और छात्रों को सार्वजनिक स्कूलों में उत्तीर्णता की सुनिश्चित करना, ऐसे निर्णयों की एक संयुक्त प्रयास के रूप में शिक्षा के स्तर को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, यह सुनिश्चित करता है कि हर छात्र को समान और उचित शिक्षा का अधिकार है और उन्हें अपने पोटेंशियल को पूरी तरह से विकसित करने का मौका मिले।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Kumar Rashimi, Chandre saurabh : Teacher Education In The 21St Century, 15 September 2018

Gupta Dr. Manju : Teacher Education In India And Global Perspective, 1 January 2016

Srivastav R.C. : Teacher Education in India: Issues and Perspectives, 31 December 1997

https://www.aajkiawaaz.com/national-education-business#google_vignette

https://www.navodayatimes.in/news/khabre/education-in-the-clutches-of-marketing/82128/

https://dharmawiki.org/index.php/

https://shikshautthan.org/